अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 1, (January-March 2022

बरेटेन्ड रसेल के युद्ध, शान्ति और परमाणु हथियार

डॉ. **अनुराग पाण्डेय**
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान, सुलतानपुर , (उ0प्र0)

परिचय

रसेल मूलतः गणितज्ञ थे। उनकी पुस्तक Principa Mathmatica एक प्रसिद्ध कृति थी। वे तर्कशास्त्री भी थे। अपनी इस प्रसिद्धि के अतिरिक्त वे सामाजिक एवं राजनीतिक कायकर्ता भी थे। रसेल जीवन के अन्तिम तक राजनीतिक मुद्दों पर अपनी राय रखते रहे।

युद्ध, शान्ति और परमाणु हथियारः-

रसेल मूलतः उदारवादी साम्राज्यवादी थे। परन्तु समय के साथ साम्राज्यवाद के विरोधी हो गये। साथ ही वो शान्ति के पक्षधर भी हो गये। रसेल युद्ध के विरोधी थे। उनका मानना था कि युद्ध सभ्यता के विपरीत है। साथ ही अनैतिक भी। परन्तु कभी-कभी उनके विचारों में विरोधाभास भी था। उदाहरणतः 1915 में उन्होंने एक निबन्ध "The Ethics of war" लिखा। इस निबन्ध में उन्होंने उपनिवेश बनाने के लिए चलने वाले युद्ध का समर्थन किया। उन्होंने ऐसे युद्धों का समर्थन इस आधार पर किया कि यदि श्रेष्ठ सभ्यता वाला निम्न सभ्यता पर वर्चस्व स्थापित करेगा तो वह निम्न सभ्यता वाले के लिए लाभकारी होगा। साथ ही जो जमीन नियंत्रित की जाएगी उसका भी उपयोग बेहतर कार्यों के लिए किया जा सकेगा।

रसेल युद्ध को शैतानी हरकत मानते थे। पर कभी-कभी युद्ध को आवश्यक बुराई के रूप में परिभाषित करते थे। उदाहरणार्थ द्वितीय विश्वयुद्ध में हिटलर के प्रभाव को पूरी तरह समाप्त करने के पक्षधर थे। यद्यपि द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व वो शान्ति के पक्षधर थे पर हिटलर को पराजित करना लोकतंत्र के लिए आवश्यक मानते थे।

रसेल के विचार आणविक अस्त्रों के उपयोग पर विरोधाभासी थे। एक तरफ वो आणविक अस्त्रों को सभ्यता और मानवता के लिए विनाशकारी मानते थे वहीं दूसरी तरफ सोवियत संघ पर आणविक अस्त्रों से प्रहार को आवश्यक मानते थे। उनके इस विचार के कारण सोवियत 'इजिविस्ता' ने उन्हें 'अंग्रेजी फासीवादी मालथीसियन दार्शनिक' कहकर खारिज कर दिया।

1957-58 में रसेल ने ब्रिटेन को एकपक्षीय आणविक निरास्त्रीकरण की सलाह दी। क्यूबा की प्रक्षेपास्त्र समस्या पर, जान आफ केनेडी, (John of Canedy) ख्रुशचोव आदि को संदेश भेजा। जान आफ केनेडी, (John of Canedy) को रसेल 'हिटलर से भी खतरनाक बताते थे।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 1, (January-March 2022

साम्यवादः-

रसेल समाजवादी थे। उन्होंने अपने पत्र में कहा कि यह स्पष्ट है कि 'समाजवादी विश्व के लिए आशा हैं।' रसेल ने 'श्रेणी समाजवाद' का भी समर्थन किया।

अपनी सोवियत यात्रा और लेनिन से मुलाकात के पूर्व, साम्यवादी प्रयोग के लिए रसेल सकारात्मक भाव रखते थे। पर सोवियत संघ की यात्रा के बाद वे साम्यवादी प्रयोग और लेनिन के बारे में आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखने लगे। अपने आलोचनात्मक लेख "The Practice and Theory of Bolshevism" में लिखा कि लेनिन के व्यक्तित्व ने उन्हें अपेक्षा से कम प्रभावित किया। वो लिखते हैं कि लेनिन एक धार्मिक कट्टर की तरह थे जो मार्क्स के अतिरिक्त अन्य किसी तथ्य को सत्य नहीं मानते थे। रसेल सोवियत व्यवस्था की आलोचना करते थे पर साम्यवाद को दुनिया के लिए आवश्यक मानते थे। अपने जीवन के अन्तिम काल में रसेल ने मार्क्सवादी और साम्यवाद दोनों को पूर्णतः त्याग दिया। उन्होंने कहा कि मार्क्सवादी सिद्धान्त मुख्यतः मार्क्स के ही विचार हैं। रसेल मानते थे कि मार्क्स के सिद्धान्त मुख्यतः घृणा पर आधारित थे। इसलिए त्यागने योग्य हैं। वो कहते थे कि मैं साम्यवाद को इसलिए भी त्यागने योग्य मानता हूँ क्योंकि यह लोकतंत्र को अस्वीकार करता है। दूसरा साम्यवाद गरीबी, घृणा और संघर्ष पर आधारित है।

व्यक्तिवादः-

रसेल जे0 एस0 मिल के विचारों से प्रभावित थे, रसेल व्यक्ति की स्वतंत्रता को बहुत महत्त्व देते थे। उनका मानना था कि राज्य ने व्यक्ति की स्वतंत्रता को बहुत सीमित कर दिया है। रसेल राज्य के कार्यों पर प्रश्न उठाते हैं। रसेल का मानना था कि यदि व्यक्ति को अपनी स्वतंत्रता और वैयक्तिकता को बचाना है तो समूहों को और व्यक्तियों को राज्य के विरोध में खड़ा होना होगा। रसेल मानते थे कि यदि नागरिक विभिन्न विषयों पर अपनी राय रखना बन्द कर देंगे और मानवीय जीवन की समस्याओं को अनदेखा करेंगे तो स्वतंत्र चिंतन और संवाद समाप्त हो जायेगा। रसेल स्पष्ट करते हैं कि सर्वाधिकारवादी सरकारों में मनुष्य ने उपरोक्त परिस्थितियाँ देखी हैं। रसेल यह भी कहते हैं कि किसी भी राजनैतिक संगठन का महत्त्व इस तथ्य पर आधारित होता है कि वह व्यक्ति को कितना महत्त्व देता है। रसेल मानते थे कि यदि राज्य व्यक्ति को महत्त्व नहीं देगा तो मनुष्य, मनुष्य न रहकर मशीन बन जायेगा।

रसेल व्यक्तिवाद को महत्त्व देते हुए कहते हैं कि यदि मानव आर्थिक कारकों और सरकारी मशीनरी द्वारा दबाया नहीं जाता तभी उसका व्यक्तित्व जीवित रह सकता है। यह व्यक्तित्व ही है जिसके अभाव में मनुष्य गरिमापूर्ण जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। व्यक्तिवाद को जीवित रखना सभी राजनीतिक संगठनों का लक्ष्य होना चाहिए।

रसेल कहते हैं कि सभ्यता और समाज का विकास मानवीय प्रयासों से हुआ है। असाधारण मेधा के धनी मनुष्यों ने साहित्य, दर्शन, धर्म और विज्ञान में अपना योगदान देकर सभ्यता को आगे बढ़ाया है। अपनी पुस्तक " Road to Freedom"

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 1, (January-March 2022

में रसेल ने स्पष्ट किया है कि कोई भी समुदाय राज्य के प्रयासों से आगे नहीं बढ़ता वह समुदाय में निवास करने वाले मनुष्यों के सामूहिक सकारात्मक प्रयासों से प्रगति करता है।

रसेल ने अपनी रचनाओं में व्यक्ति और सत्ता के सम्बन्धों पर भी विचार रखे हैं। रसेल ने लगातार सत्ता के विरोध में व्यक्ति की स्वतंत्रता पर बल दिया। रसेल ने मात्र सैद्धान्तिक स्तर पर व्यक्ति की स्वतंत्रता की बात ही नहीं की अपितु विभिन्न अवसरों पर जब मनुष्य की स्वंतत्रता खतरे में थी रसेल ने आवाज उठायी।

महिला मताधिकारः-

रसेल लिबरल पार्टी के सदस्य थे। उन्होंने पार्टी के सदस्य के रूप में और राजनीतिक कार्यकत्ता के रूप में महिला मताधिकार का समर्थन किया। उन्होंने "Anti -Suffragist Anxieties" में लिखा कि कुछ पुरूष महिलाओं के मताधिकार का विरोध इसलिए करते हैं क्योंकि यदि महिलाओं को मत देने का अधिकार मिल गया तो पुरूष मन माने कार्य नहीं कर पायेंगे।

नस्लः-

रसेल नस्लीय समानता के पक्षधर थे। यद्यपि कई स्थानों पर उनके विचारों का सहारा लेकर उन्हें नस्लीय श्रेष्ठता का पक्षधर भी बताया गया है। "New hopes for a changing world" में उन्होंने लिखा कि कभी-कभी कहा जाता है कि नस्लीय मिश्रण वांछित नहीं है, परन्तु ऐसा कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है न ही यह कहा जा सकता है कि अश्वेत व्यक्ति श्वेत व्यक्तियों की तुलना में कम बुद्धिमान होते हैं। यदि अश्वेत व्यक्तियों के पास श्वेत व्यक्ति की तुलना में अवसर की उपलब्धता कम है तो निष्कर्ष निकालना और भी दुष्कर है। कुछ मामलों में नस्लीय श्रेष्ठता हो भी सकती है पर हमारे पास कोई आधार नहीं है यह कहने के लिए कि अश्वेत श्वेत की तुलना मे निम्न हैं।

समाजवादः-

1918 में रसेल अपनी पुस्तक Proposed Roads to freedom : Socialism, Anarchism and Syndicalism में अराजकतावाद, मार्क्सवादी समाजवाद, श्रेणी समाजवाद पर अपने विचार व्यक्त किए। ये सारे सिद्धान्त उत्पादन के साधनों पर लोकतांत्रिक माध्यम से समाज के नियंत्रण की वकालत करते थे। उनका मानना था कि जब उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण रखने वालों ने यह देखा कि सर्वहारा वर्ग उनसे नियंत्रण छीन लेगा तो उन्होंने अपनी शक्ति को बचाने के लिए समाजाद की राह पकड़ ली। वो कहते हैं कि समाजवाद वास्तव में मार्क्सवादी ही है। परन्तु यह सर्वहारा की बुर्जुआ के प्रति बदले की मानसिकता से अलग है। रसेल कहते हैं कि मैं समाजवाद को संतुलन स्थापित करने का प्रयास मानता हूँ। ऐसा प्रयास जो सर्वहारा वर्ग की खुशियों को ही नहीं बढ़ाता अपितु सभी की प्रसन्नता में वृद्धि करता है। समाजवादी प्रक्रिया से केवल एक छोटे वर्ग को कष्ट पहुँचता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 1, (January-March 2022

रसेल कहते हैं कि समाजवाद का आर्थिक पक्ष उत्पादन के साधनों के सरकारी नियंत्रण पर बल देता है। राजनीतिक पक्ष सत्ता को लोकतांत्रिक बनाना चाहता है। उनका मानना था कि सरकार समाजवादी तभी बन सकती है जब वह लोकतांत्रिक माध्यम से लोगों में अपनी स्वीकार्यता बढ़ायेगी। अंततोगत्वा रसेल समाजवाद को दुनिया के लिए एक आशा के रूप में स्वीकार करते हैं।

संदर्भ:-

1- बरट्रेन्ड रसेल ''आटोबायोग्राफी आॅफ बरट्रेन्ड रसेल''।

2- बरट्रेन्ड रसेल ''पोरट्रेटस फ्राम मेमोरी एण्ड अदर एसेस''।

3- बरट्रेन्ड रसेल ''अथारिटी एण्ड इन्डीवीडुअल''।

4- बरट्रेन्ड रसेल ''पोलिटकल आइडिआस (जार्ज एलेन एण्ड अनविन''।

5- बरट्रेन्ड रसेल ''रोडस टू फ्रीडम (जार्ज एलेन एण्ड अनविन)''।